प्रेस विज्ञप्ति

गोविन्द बल्लभ पंत कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय पंतनगर, जिला- ऊधमसिंह नगर (उत्तराखण्ड)

पारम्परिक कृषि पर कार्यशाला सम्पन्न

पंतनगर। ३१ अगस्त, २०१७। एशियन एग्री हिस्ट्री फाउन्डेशन के उत्तराखण्ड चैप्टर के तत्वावधान में पंतनगर विश्वविद्यालय में 'पारम्परिक कृषि में नवीनता का समावेश : मानवता को बचाने का विकल्प' विषयक दो-दिवसीय कार्यशाला का कल देर सायं समापन हो गया। समापन सत्र में विश्वविद्यालय के कुलपति, डा. जे. कुमार, ने सभी वैज्ञानिकों व कृषकों से पुरातन समय से चली आ रही कृषि विधाओं में नवीनता का समावेश करते हुये २०३० तक अनाज का ३५० मिलियन टन उत्पादन करने का लक्ष्य रखा, ताकि बढ़ती आबादी का पेट भरा जा सके। डा. जे. कुमार ने कहा कि किसान भी एक वैज्ञानिक है, जो अपने अनुभवों के आधार पर तकनीकों में नवीनता का समावेश करता है। फाउन्डेशन के संस्थापक एवं पूर्व अध्यक्ष, डा. वाई.एल. नेने, ने विभिन्न प्रकार की जैविक खेती, अग्निहोत्र खेती, पंचगव्य खेती इत्यादि के बारे में विस्तार से बताया। डा. नेने, ने 'कृषि की अद्भुत धरोहर' को स्नातक पाठ्यक्रम में शामिल किये जाने पर प्रसन्नता व्यक्त की तथा कहा कि प्राचीन ज्ञान का लिपिबद्ध किया जाना बड़ा आवश्यक है। फाउन्डेशन के संस्थापक ट्रस्टी, डा. एस.पी.एस. बेनीवाल, ने पारम्परिक कृषि इतिहास की पूरी यात्रा को चरणबद्ध तरीके से प्रस्तुत किया। पद्मश्री सुभाष पालेकर ने शून्य बजट प्राकृतिक खेती पर विस्तृत भाषण देकर सभी युवाओं को चिंतन व मंथन करने पर मजबूर कर दिया। श्री पालेकर ने कहा कि प्रकृति में प्रत्येक तत्व उपलब्ध है, हमें अलग से कुछ भी नही प्रयोग करना है। नरसिंहपुर से आये श्री ताराचन्द्र बेलजी ने प्रकृति के ऊर्जा विज्ञान व आयुर्वेद की रस-रसायन पद्धति के बारे में विस्तृत चर्चा की। बीज बचाओ आन्दोलन के प्रणेता श्री विजय जड़धारी ने जैविक विविधताओं की चर्चा करते हुये कहा कि शोधपत्रों को हिन्दी भाषा में भी प्रस्तुत किया जाना जरूरी है, ताकि सभी कृषक इससे लाभान्वित हो सकें। इससे पूर्व कार्यक्रम की आयोजिका सचिव, डा. सुनीता टी. पाण्डेय, ने सभी सत्रों की सिलसिलेवार रिपोर्ट प्रस्तुत की तथा कहा कि इस कार्यशाला से विद्यार्थियों में पारम्परिक कृषि के प्रति रूझान जागृत हुआ है, जो कार्यशाला का एक प्रमुख उद्देश्य था। कार्यशाला में विद्यार्थियों की बड़ी संख्या में सहभागिता एक प्रमुख उपलब्धि रही। कार्यक्रम का संचालन डा. अलका गोयल व धन्यवाद ज्ञापन डा. सुनीता टी. पाण्डेय ने किया।

कार्यशाला के समापन सत्र में सम्बोधित करते डा. वाई.एल. नेने।